

INDEX

- ✓ भारत में 1991 के पश्चात् अपनाए गए नए आर्थिक सुधारों – उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण – की पृष्ठभूमि, मुख्य विशेषताएँ
- ✓ उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण की संकल्पना
- ✓ अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
- ✓ विश्व बैंक पर
- ✓ पविश्व व्यापार संगठन
- ✓ बैंकिंग सुधार
- ✓ स्वयं सहायता समूह
- ✓ नाबार्ड
- ✓ क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक
- ✓ अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक
- ✓ ग्रामीण सहकारी बैंक
- ✓ वित्तीय समावेशन
- ✓ वैश्वीकरण
- ✓ कृषि क्षेत्र में सुधार तथा विकास पर इसका प्रभाव
- ✓ प्रत्यक्ष विदेशी निवेश एवं पोर्टफोलियो विदेशी निवेश
- ✓ भारत में कृषि क्षेत्र के विकास
- ✓ विदेशी पूंजी और विदेशी तकनीकी की भूमिका

- ✓ विनिवेश और निजीकरण

- ✓ : भारत में सार्वजनिक उपक्रमों के विनिवेश

प्रश्न: भारत में 1991 के पश्चात् अपनाए गए नए आर्थिक सुधारों — उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण — की पृष्ठभूमि, मुख्य विशेषताएँ तथा इनके भारतीय अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का विवेचन कीजिए।

उत्तर:

वर्ष 1991 भारतीय अर्थव्यवस्था के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। इस वर्ष भारत ने एक गंभीर आर्थिक संकट के जवाब में अपनी समाजवादी-उन्मुख आर्थिक नीतियों को त्यागकर एक नई आर्थिक नीति (New Economic Policy) अपनाई। यह नीति मुख्य रूप से तीन स्तंभों पर आधारित थी - उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण, जिन्हें संक्षेप में 'एलपीजी' (LPG) सुधार कहा जाता है। इन सुधारों ने न केवल भारत को तत्कालीन संकट से उबारा, बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना और भविष्य की दिशा को भी स्थायी रूप से बदल दिया।

सुधारों की पृष्ठभूमि

1991 के आर्थिक सुधार किसी आकस्मिक निर्णय का परिणाम नहीं थे, बल्कि वे दशकों से चली आ रही आर्थिक समस्याओं और तात्कालिक संकटों की परिणति थे। इसकी पृष्ठभूमि के मुख्य कारण निम्नलिखित थे:

- **भुगतान संतुलन का गंभीर संकट :** 1990-91 तक भारत का विदेशी मुद्रा भंडार लगभग समाप्त हो चुका था। यह केवल कुछ हफ्तों के आयात बिल का भुगतान करने के लिए ही पर्याप्त था, जिससे देश के दिवालिया होने का खतरा उत्पन्न हो गया था।
- **उच्च राजकोषीय घाटा :** सरकार का व्यय उसके राजस्व से कहीं अधिक था, जिससे राजकोषीय घाटा लगातार बढ़ रहा था। यह घाटा सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का लगभग 8.4% तक पहुँच गया था, जो अर्थव्यवस्था के लिए अस्थिर था।
- **उच्च मुद्रास्फीति :** आवश्यक वस्तुओं की कीमतें तेजी से बढ़ रही थीं और मुद्रास्फीति की दर दोहरे अंकों में पहुँच गई थी, जिससे आम आदमी का जीवनयापन मुश्किल हो गया था।
- **सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों का खराब प्रदर्शन :** अधिकांश सरकारी कंपनियाँ (PSUs) घाटे में चल रही थीं और उनकी अकुशलता अर्थव्यवस्था पर एक बोझ बन गई थी।
- **खाड़ी युद्ध (Gulf War):** 1990 में इराक-कुवैत युद्ध के कारण कच्चे तेल की कीमतें आसमान छू गईं, जिससे भारत का आयात बिल बढ़ गया। साथ ही, खाड़ी देशों से भारतीय प्रवासियों द्वारा भेजे जाने वाले धन (remittances) में भी कमी आई।
- **अंतर्राष्ट्रीय दबाव:** संकट से उबरने के लिए जब भारत ने अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) और विश्व बैंक से ऋण के लिए संपर्क किया, तो इन संस्थाओं ने संरचनात्मक सुधारों को लागू करने की शर्त रखी।

इन परिस्थितियों में, तत्कालीन प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव और वित्त मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में नई आर्थिक नीति को लागू किया गया।

नई आर्थिक नीति की मुख्य विशेषताएँ

नई आर्थिक नीति को मुख्य रूप से तीन भागों में बांटा जा सकता है:

1. उदारीकरण (Liberalization): इसका अर्थ था अर्थव्यवस्था पर लगे अनावश्यक सरकारी नियंत्रणों और प्रतिबंधों को समाप्त करना। इसके तहत निम्नलिखित कदम उठाए गए:

- कुछ सामरिक महत्व के उद्योगों (जैसे रक्षा, परमाणु ऊर्जा) को छोड़कर लगभग सभी उद्योगों को लाइसेंस-मुक्त कर दिया गया।
- कंपनियों को विस्तार करने और निवेश करने के लिए अधिक स्वतंत्रता दी गई।
- नरसिम्हम समिति की सिफारिशों के आधार पर बैंकिंग क्षेत्र में सुधार किए गए, निजी बैंकों को प्रवेश की अनुमति दी गई और भारतीय रिजर्व बैंक की भूमिका को एक नियामक के रूप में अधिक मजबूत किया गया।
- कर दरों को कम किया गया और कर प्रणाली को सरल बनाया गया (राजा चेलैया समिति की सिफारिशों)।

2. निजीकरण (Privatization): इसका उद्देश्य सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका को कम करना और निजी क्षेत्र को अर्थव्यवस्था में एक बड़ी भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित करना था।

- **विनिवेश (Disinvestment):** घाटे में चल रहे या गैर-रणनीतिक सार्वजनिक उपक्रमों में सरकारी हिस्सेदारी को बेचा गया।
- **आरक्षित उद्योगों को खोलना:** जो क्षेत्र पहले केवल सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित थे, जैसे- दूरसंचार, विमानन, बिजली आदि, उन्हें निजी क्षेत्र के लिए खोल दिया गया।

3. वैश्वीकरण (Globalization): इसका लक्ष्य भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करना था।

- प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) और विदेशी संस्थागत निवेश (FII) के लिए नियमों को सरल बनाया गया।
- आयात शुल्कों (import tariffs) में भारी कटौती की गई और आयात पर लगे मात्रात्मक प्रतिबंधों (quotas) को हटाया गया।
- व्यापार और निवेश को सुगम बनाने के लिए चालू खाते पर रुपये को परिवर्तनीय बनाया गया।
- भारत 1995 में विश्व व्यापार संगठन का संस्थापक सदस्य बना, जिसने वैश्विक व्यापार नियमों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाया।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

एलपीजी सुधारों का भारतीय अर्थव्यवस्था पर गहरा और बहुआयामी प्रभाव पड़ा, जिसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू थे।

सकारात्मक प्रभाव :

- भारतीय अर्थव्यवस्था "हिंदू विकास दर" (लगभग 3.5%) के दौर से निकलकर 6-8% की उच्च विकास दर की पटरी पर आ गई।
- संकट के समय लगभग 1 बिलियन डॉलर के मुकाबले आज भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 600 बिलियन डॉलर से भी अधिक है, जो अर्थव्यवस्था को स्थिरता प्रदान करता है।
- सूचना प्रौद्योगिकी (IT) और आईटी-सक्षम सेवाओं (ITES) के क्षेत्र में भारत एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरा। बेंगलुरु, हैदराबाद और पुणे जैसे शहर वैश्विक आईटी हब बन गए।
- सुधारों ने भारत को एक आकर्षक निवेश गंतव्य बनाया, जिससे देश में पूंजी और प्रौद्योगिकी का प्रवाह बढ़ा।
- बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ने से उपभोक्ताओं को बेहतर गुणवत्ता वाले उत्पाद और सेवाएँ कम कीमतों पर उपलब्ध हुईं।
- लंबी अवधि में राजकोषीय अनुशासन और बेहतर आपूर्ति प्रबंधन से मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने में मदद मिली।

नकारात्मक प्रभाव :

- सुधारों का ध्यान मुख्य रूप से उद्योग और सेवा क्षेत्र पर था। कृषि क्षेत्र में सार्वजनिक निवेश कम हुआ, जिससे यह क्षेत्र संकटग्रस्त हो गया और किसानों की आय में स्थिरता आ गई।
- सुधारों का लाभ मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों और कुशल श्रमिकों तक सीमित रहा। शहरी और ग्रामीण भारत तथा अमीर और गरीब के बीच की खाई चौड़ी हुई।
- जीडीपी में वृद्धि के अनुपात में संगठित क्षेत्र में रोजगार के अवसर उत्पन्न नहीं हुए। अधिकांश रोजगार अनौपचारिक क्षेत्र में ही सीमित रहे।
- कई छोटे और मध्यम उद्योग (SMEs) बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों और सस्ते आयातित सामानों की प्रतिस्पर्धा में टिक नहीं सके और बंद हो गए।
- विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़ने के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था 2008 की वैश्विक वित्तीय मंदी जैसे बाहरी झटकों के प्रति अधिक संवेदनशील हो गई।

निष्कर्ष

निस्संदेह, 1991 के आर्थिक सुधार एक ऐतिहासिक आवश्यकता थे, जिन्होंने भारत को एक आसन्न आर्थिक पतन से बचाया और एक तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित किया। इन सुधारों ने भारत की वैश्विक छवि को बदला और एक नए आत्मविश्वास से भरे मध्यवर्ग को जन्म दिया।

हालांकि, यह भी सत्य है कि इन सुधारों के लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँचे। कृषि संकट, बढ़ती असमानता और रोजगार सृजन की धीमी गति आज भी प्रमुख चुनौतियाँ बनी हुई हैं। अतः, भविष्य का मार्ग पहली पीढ़ी के सुधारों को पूरी तरह नकारने का नहीं, बल्कि उन्हें अधिक समावेशी बनाने का है। 'मेक इन इंडिया', 'स्किल इंडिया' और कृषि क्षेत्र में निवेश बढ़ाने जैसी वर्तमान सरकारी पहलें इन कमियों को दूर करने और सुधारों के लाभ को जन-जन तक पहुँचाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं, ताकि विकास सतत और सर्वसमावेशी हो सके।

प्रश्न: उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण की संकल्पना को स्पष्ट करें। भारत में आर्थिक सुधार को लागू करने की आवश्यकता पर प्रकाश डालें।

उत्तर:

वर्ष 1991 भारतीय आर्थिक इतिहास में एक युगांतकारी मोड़ था, जिसने देश की विकास यात्रा की दिशा को स्थायी रूप से बदल दिया। इस वर्ष, भारत ने दशकों से चली आ रही राज्य-नियंत्रित, संरक्षणवादी और आंतरिक-उन्मुख अर्थव्यवस्था के मॉडल को त्यागकर एक अधिक बाजार-उन्मुख और खुली अर्थव्यवस्था को अपनाया। यह परिवर्तन **नई आर्थिक नीति (New Economic Policy)** के माध्यम से लाया गया, जो मुख्य रूप से तीन स्तंभों पर आधारित थी: **उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण**, जिन्हें संक्षेप में '**एलपीजी**' (**LPG**) सुधार कहा जाता है। ये सुधार एक सोची-समझी वैचारिक पसंद नहीं, बल्कि एक गंभीर आर्थिक संकट से उत्पन्न हुई एक अपरिहार्य आवश्यकता थे।

उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की संकल्पना

एलपीजी सुधारों की तीन अवधारणाएँ परस्पर जुड़ी हुई हैं और एक दूसरे की पूरक हैं:

1. उदारीकरण (Liberalization):

उदारीकरण का शाब्दिक अर्थ है 'उदार बनाना' या 'मुक्त करना'। आर्थिक संदर्भ में, इसका तात्पर्य अर्थव्यवस्था पर लगे अनावश्यक सरकारी नियंत्रणों, प्रतिबंधों और बाधाओं को समाप्त करने या उनमें ढील देने की प्रक्रिया से है। इसका मुख्य उद्देश्य आर्थिक गतिविधियों को नौकरशाही के चंगुल से मुक्त कर प्रतिस्पर्धा और दक्षता को बढ़ावा देना था।

भारत के संदर्भ में मुख्य उपाय:

- **'लाइसेंस-परमिट राज' की समाप्ति:** कुछ रणनीतिक क्षेत्रों को छोड़कर अधिकांश उद्योगों को लाइसेंस लेने की अनिवार्यता से मुक्त कर दिया गया।
- **एकाधिकार तथा अवरोधक व्यापार व्यवहार (MRTP) अधिनियम में ढील:** कंपनियों को विस्तार करने, विलय करने और उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए अधिक स्वतंत्रता दी गई।
- **वित्तीय क्षेत्र में सुधार:** नरसिंहम समिति की सिफारिशों के आधार पर बैंकिंग क्षेत्र में सुधार किए गए, निजी बैंकों को प्रवेश की अनुमति दी गई और ब्याज दरों का अविनियमन किया गया।
- **कर सुधार:** कर दरों को कम किया गया और कर प्रणाली को सरल बनाया गया।

2. निजीकरण (Privatization):

निजीकरण का तात्पर्य सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (Public Sector Undertakings - PSUs) के स्वामित्व और/या प्रबंधन को निजी क्षेत्र को हस्तांतरित करने की प्रक्रिया से है। यह "सरकार को व्यवसाय में नहीं होना चाहिए" के सिद्धांत पर आधारित है। इसका उद्देश्य PSUs की दक्षता में सुधार करना, सरकारी घाटे को कम करना और व्यावसायिक प्रबंधन को बढ़ावा देना है।

भारत के संदर्भ में मुख्य उपाय:

- **विनिवेश (Disinvestment):** सरकार द्वारा PSUs में अपनी हिस्सेदारी के एक हिस्से को बेचना, जैसे **जीवन बीमा निगम (LIC)** का IPO।
- **रणनीतिक बिक्री (Strategic Sale):** सरकार द्वारा PSU में बहुलांश हिस्सेदारी और प्रबंधन नियंत्रण को एक निजी कंपनी को बेचना, जैसे **एयर इंडिया** का टाटा समूह को बेचा जाना।

3. वैश्वीकरण (Globalization):

वैश्वीकरण का अर्थ है देश की अर्थव्यवस्था को विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करना। इसमें वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी, प्रौद्योगिकी और कुछ हद तक श्रम का सीमाओं के पार मुक्त प्रवाह शामिल है। इसका उद्देश्य वैश्विक संसाधनों, बाजारों और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर देश के विकास को गति देना है।

भारत के संदर्भ में मुख्य उपाय: